"मंडुआ एक बाजरा प्रजातीय फसल है। इसका भारत के कई इलाकों में उत्पादन किया जाता है। यह दक्षिण भारत के कई राज्यों तथा जनजातीय लोगों का मुख्य आहार है। इसमें कैल्शियम, लौह आदि बहुत सारे पोषक तत्व पाए जाते हैं। ये शरीर के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। मंडुआ के उत्पादन में कृषक महिलाएं अहम् भूमिका निभाती हैं। वे जमीन की तैयारी से लेकर मंडुआ उत्पादन, मूल्यवर्धन तथा विपणन में मुख्य रूप से काम करती हैं। पारंपरिक विधि द्वारा मंडुआ की खेती में महिलाएं कड़ी मेहनत करती हैं। इससे वे शारीरिक तथा मानसिक रूप से थक जाती हैं। शिक्षा में कमी के कारण विपणन में उनका कभी-कभी नुकसान भी होता है और लागत से कम मूल्य प्राप्त होता है। मूल्यवर्धन और प्रसंस्करण में ज्ञान की कमी के कारण महिलाओं को उचित मूल्य नहीं मिल पाता है।"

कदन्न विशेषांक

मंडुआ प्रसंस्करण में बढ़ता महिलाओं का योगदान

संतोष कुमार श्रीवास्तव, गायत्री महाराणा और **जे. चार्ल्स जीवा**
भाकृअनुप–केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा–751003

भाकृअनुप-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान द्वारा मंडुआ आधारित मूल्य श्रृंखला में महिलाओं तथा पुरुषों की भूमिका एवं गतिशीलता को समझने के लिए एक अध्ययन किया गया। इसमें मंडुआ उत्पादक राज्यों जैसे तमिलनाडु, कर्नाटक एवं ओडिशा से भिन्न-भिन्न स्तर पर जानकारियां ली गई हैं। इसमें महिलाएं प्रसंस्करण इकाइयों और छोटे व्यापारी और श्रमिकों के रूप में सम्मलित पाई गई थीं। पुरुष वर्ग व्यापारी, खुदरा विक्रेता तथा थोक व्यापारी के रूप में पाए गए थे। प्रसंस्करण इकाइयों में महिलाएं अनाज की सफाई, अनाजों को मशीनों में डालने, आटे को इकट्ठा करने और पैकेट बनाने के लिए श्रमिक के रूप में काम कर रही थीं, जबकि पुरुष वजन उठाने, खाता रखने और रखरखाव में शामिल थे।

मंडुआ उत्पादन और इसके प्रसंस्करण में कड़ी मेहनत की जरूरत पड़ती है। पारंपरिक विधि से कटाई करना, मृदा के मैदान में मोटी लकड़ी के डंडे से पीट कर मंड़ाई करना, सूप चलाकर साफ करना, बोरियों में भरकर रखना, सिर पर बोझ ढोना आदि कष्टदायक कार्य महिलाओं के द्वारा किए जाते हैं। उसके बाद अनाज को सुखाकर हाथ की चक्की से पीसकर आटा

मंडुआ प्रसंस्करण में सक्रिय महिला

बनाती हैं और अपने परिवार को खिलाती हैं। अपनी साल भर के जरूरत के अनाज को भंडारण करने के बाद बाकी बचे हुए अनाज को बेचती हैं। पारंपरिक विधि से करने वाले कार्यों में अधिक समय तक कमर झुकाना, गर्दन झुकाए रखना, हाथ को बार-बार चलाने से शरीर की मांसपेशियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। बाद में इससे कमर, गर्दन और कंधे में दर्द और तनाव आदि होता है। मंड़ाई के दौरान मृदा और पौधों से निकलने वाले पदार्थ प्रदूषण पैदा करने के साथ-साथ रोग भी फैलाते हैं। इन्हीं सब कारणों की वजह से महिलाओं की कार्य करने की क्षमता कम हो जाती है। उन्नत तकनीकियों के बारे में ज्ञान की कमी के चलते उनको कष्ट सहना पड़ता है। इसलिए मंडुआ के उत्पादन में कार्य करने वाली महिलाओं के श्रम को कम करने के लिए उन्नत कृषि उपकरण और यंत्रों को उपलब्ध करवाना जरूरी है।

महिलाएं विक्रेताओं के रूप में व्यावसायिक स्तर पर बाजारों में उपज बेचती हैं। जनवरी से लेकर मार्च के दौरान उपज की मात्रा प्रति सप्ताह 25-40 कि.ग्रा. होती है और महिलाएं उसको साप्ताहिक बाजार में बेचती हैं। चयनित मूल्य श्रृंखला में महिलाओं की भूमिका दस्तावेज करने के लिए तीनों राज्यों में उद्यमियों के साथ संपर्क किया गया और पाया गया कि तमिलनाडु एवं कर्नाटक के बाजारों में मंडुआ से बनी हुई माल्ट, आटा, बिस्कुट, मल्टी ग्रेन मिक्स आदि अधिक मूल्यवर्धित उत्पादों की मांग वहां के बाजारों में बहुत होने के कारण यह बाजारों और सुपर मार्किट में ऊंची कीमत पर मिलती हैं। मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और रक्तहीनता आदि के मरीज मंडुआ से बनी खाद्य सामग्री को रोजाना के आहार में शामिल करते हैं। ओडिशा में उत्पाद विविधीकरण केवल मंडुआ के आटे तक सीमित है। यह सुपर मार्केट की व्यवस्था, कच्चे माल की खराब गुणवत्ता, जटिल प्रणाली के नवीनीकरण, मंडुआ के पौष्टिक मूल्य के बारे में ज्ञान की कमी और बाजार के उतार-चढ़ाव के बारे में जागरुकता की कमी के कारण है। आर्थिक बाधाएं जैसे कि वित्त तक कम पहुंच, उत्पादन की कम कीमत और तकनीकी बाधाएं जैसे उचित कौशल की कमी है, महिलाओं के अनुकूल कृषि यंत्रों और उपकरणों का उपलब्ध न होना, प्रशिक्षण का अभाव, महिला किसानों के लिए विस्तार संपर्क की कमी आदि मुद्दे भी मंडुआ उत्पादन प्रणाली एवं मूल्य श्रृंखला में महिलाओं के विकास में बाधक हैं।

मंडुआ प्रसंस्करण में महिलाओं की पहचान

मंडुआ मूल्य श्रृंखला में महिलाओं के प्रवेश बिन्दु की पहचान की गई। दो गांव में महिला स्वयं सेवक समूह को दो भाग में एकत्रित करके मंडुआ पल्वराइजर, डिजिटल वजन नापने की मशीन, पैकेजिंग के लिए सीलिंग मशीन आदि उपलब्ध कराए गए। यह न केवल मंडुआ के आटे, बल्कि अन्य फसलों जैसे गेहूं, बाजरा, हल्दी पीसने के काम में भी मदद करेगी। उपरोक्त व्यवस्था के द्वारा विशेष रूप से मंडुआ का मूल्यवर्धन करके महिलाएं अपने विपणन में लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि करके अपनी आय बढ़ा सकती हैं। इसके अलावा महिलाओं के श्रम को कम करने के लिए खरपतवार प्रबंधन में निराई करने वाले यंत्र का परिचालन करने का प्रशिक्षण देने से वे बिना किसी की मदद के आसानी से उसको चलाकर खरपतवार को निकाल सकती हैं। इससे पैसे और समय दोनों की बचत हो सकेगी। ■

महिला भागीदारी

ओडिशा में मंडुआ कि खेती में कृषक महिलाओं द्वारा की जाने वाली प्रमुख गतिविधियां, विविधता चयन (60 प्रतिशत), भूमि की तैयारी (65 प्रतिशत), बीज प्रबंधन (80 प्रतिशत), खाद प्रयोग (75 प्रतिशत), सिंचाई (75 प्रतिशत), खरपतवार प्रबंधन (80 प्रतिशत), कटाई (80 प्रतिशत), मंडाई और सुखाना (95 प्रतिशत), भंडारण प्रबंधन (90 प्रतिशत) एवं विपणन (70 प्रतिशत) आदि हैं। कर्नाटक और तमिलनाडु में मंडुआ की खेती में यंत्रीकरण होने के कारण मंडुआ की खेती में महिलाओं की भागीदारी काफी कम देखने को मिली है। इन राज्यों में महिलाएं सिर्फ बीज प्रबंधन, खरपतवार, फसल कटाई, सफाई आदि कार्य 70-75 प्रतिशत तक कर रही हैं। विपणन कार्य में केवल 25-30 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी थी।

लेखकों से आग्रह

हमारे लेखक बंधु *खेती* पत्रिका के लिए अपने लेख और संबंधित फोटो, कवरिंग लैटर के साथ ई-मेल पर भी भेज सकते हैं। ध्यान रखें कि फोटो का कैप्शन इसके नीचे दिया जाये। ई-मेल से आने वाले लेखों को प्रकाशन प्रक्रिया में शीघ्र शामिल किया जाता है। लेख में अधिकतम 1500 शब्दों की संख्या रखने का प्रयास करें। पाठक अपने सुझाव और प्रतिक्रियाएं भी ई-मेल के माध्यम से भेज सकते हैं। ई-मेल भेजने के लिए कृपया कृति देव 010 टाइप फेस का प्रयोग करें।

हमारा ई-मेल है :

khetidipa@gmail.com

–संपादक